

walking out...

“मैं एक बुक स्टोर एवं सामुदायिक जगह की शुरुआत करना चाहती हूँ। मैं इसे एक ऐसी जगह के रूप में विकसित करना चाहती हूँ जिसमें खासकर युवाओं और उनके परिवारों को साथ मिलकर सीखने और स्वावलम्बी बनने में मदद मिल सके।”  
- श्रेया जेनसन्स-सेनन, न्यूयॉर्क

walking on...



“मेरे पिताजी कई सालों से शर्बत बनाते और बेचते रहे हैं। शर्बत को दिखावटी रूप से सुन्दर और टेस्टी बनाने के लिए बाजार के रंगों का इस्तेमाल भी करते थे। लेकिन मैं अब यह प्रयास कर रहा हूँ कि बिना केमिकल के देशी शर्बत बनाऊँ।”  
- निर्मल प्रजापत, उदयपुर

## जैविक उद्यम क्या और क्यों?

आज हमारे जीवन पर बड़ा बाजार इस कदर हावी हो रहा है कि हम केवल उपभोक्ता बनकर जी रहे हैं। जो भी चीजें हम इस्तेमाल कर रहे हैं, अधिकांशतः बड़ी कम्पनियों द्वारा निर्मित हैं। खरीद-बेच की प्रक्रिया में हम अपनी स्थानीय चीजों और आपसी रिश्तों से कट रहे हैं।

बड़े बाजार और रासायनिक चीजों से मुक्त होने के लिए एक पहल के रूप में हमने 31 मार्च से 3 अप्रैल तक अहमदाबाद में ‘जैविक उद्यम उत्सव’ का आयोजन किया। उत्सव के दौरान स्वपथगामियों ने मिलकर जैविक उद्यम को परिभाषित करते हुए विभिन्न विकल्प बनाने की शुरुआत की।

उत्सव के बाद कुछ लोग नए जैविक उद्यमों की शुरुआत कर रहे हैं। स्वपथगामियों के लिए जैविक उद्यम का आशय क्या है? वे कौनसे उद्यम शुरू करना चाहते हैं और क्यों? इस पर विभिन्न स्वपथगामियों का नजरिया प्रस्तुत है।

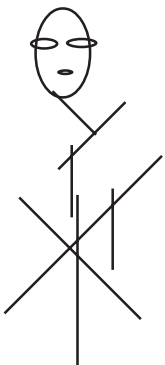
“मैं खेती के लिए देशी बीज एकत्रित करने के साथ-साथ औषधीय पौधे उगाने की शुरुआत कर रहा हूँ। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरा पूरा परिवार रासायनिक अनाज और अंग्रेजी दवाइयों पर निर्भर न हों।”

- नोरतमल जाट, अजमेर

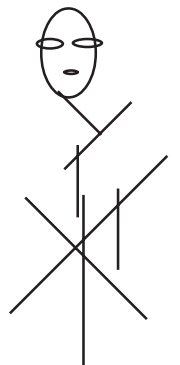


“जैविक उद्यम वे हैं, जिनमें ‘वास्तविक जरूरत’ के आधार पर उत्पादन हो और प्रकृति के संवर्द्धन की वचनबद्धता हो।”  
- संदीप चव्हाण, नाशिक

“हम कोशिश कर रहे हैं कि जो भी व्यवसाय हम करें, वो स्थानीय क्षेत्र में हों, ताकि हमारे क्षेत्र का आर्थिक सन्तुलन बना रहे व जिससे प्रकृति को फायदा मिले। ऐसे कुछ व्यवसाय जैसे - झाड़ू चरखा और खादी के कपड़े आदि का सोच रहे हैं।”  
- युवराज, इन्दौर



**स्वपथगामी**  
अंक - 6      मई 2005



# गुणियों के साथ

— जयशंकर धाभाई —

स्कूल जाने में मेरी रुचि कभी नहीं थी। फिर भी मुझे जबरन स्कूल भेजा गया था। पहली से पाँचवीं कक्षा तक मैंने कई स्कूल बदल डाले। जब मुझे कोई स्कूल पसन्द नहीं आया, तो घर वालों को समझ आया कि मेरी रुचि स्कूल में है ही नहीं। उसके बाद मैंने स्कूल छोड़ दिया और पारम्परिक चिकित्सा करने वाले गुणियों के साथ असली शिक्षा लेने की शुरुआत की।



हमारे आसपास के गाँवों में ऐसे कई गुणी लोग हैं, जिनके पास स्वास्थ्य और प्रकृति से जुड़ा अपार ज्ञान मौजूद है। इन लोगों के अनुभवों को एक-दूसरे के साथ बाँटने और प्राकृतिक चिकित्सा व्यवस्था को पुनर्प्राप्त करने की दृष्टि से जागरण जन विकास समिति ने गुणी-कार्यक्रम की शुरुआत की थी। मेरी माँ कई सालों से जागरण के साथ काम कर रही हैं, जिसकी वे संस्थापक सदस्य हैं।

स्कूल छोड़ने के बाद मेरे पास पर्याप्त समय था कि मैं कहीं भी जाकर अपनी इच्छा से सीखने के मौके खोज सकता था। प्राकृतिक और पारम्परिक चीजों में रुचि के कारण मैंने जागरण के वली गाँव में स्थित सेंटर में रहना शुरू कर दिया। वहाँ अलग-अलग जगहों से गुणी लोग आते, जड़ी-बूटियों से दवा तैयार करते और लोगों का इलाज करते थे। मैं भी गुणियों के इस काम में अक्सर शामिल होता था। गुणियों को लोगों का इलाज करते हुए देखता। जंगली पौधों के चमत्कारिक उपयोग और गुणियों के कौशल से मैं इतना प्रभावित हुआ कि धीरे-धीरे इसी काम से जुड़ गया। जीवन में कुछ अलग करने की इच्छा थी। मेरी नजर में यह काम रुचिकर था और मैं सोचता था कि पारम्परिक चिकित्सा के जरिये मैं अपने स्वास्थ्य और दूसरे लोगों के स्वास्थ्य के लिए भी काम कर सकूँगा।

स्वयं सीखने की जिज्ञासा और गुणियों के साथ रहने से मुझे जंगलों में भ्रमण करने, जड़ी-बूटियाँ खोजने और उनके अलग-अलग उपयोगों के बारे में जानने-समझने के कई मौके मिले हैं। अपने अनुभवों के आधार पर मेरा मानना है कि प्रकृति में वे तमाम चीजें उपलब्ध हैं, जो हमें स्वस्थ रखने के साथ-साथ सार्थक जीवन के लिए जरूरी हैं। अपनी किसी भी जरूरत के लिए हमें बनी-बनाई चीजों, संस्थाओं, बाहरी विशेषज्ञों पर निर्भर होने की कोई जरूरत नहीं है।

गुणियों के स्वास्थ्य शिविरों में मैंने यह महत्वपूर्ण बात सीखी कि पारम्परिक चिकित्सा में रोग के निदान या इलाज के लिए दवा के बजाय खान-पान में संयम और परहेज पर ज्यादा ध्यान देते हैं। अपने स्वास्थ्य के लिए किसी भी प्रकार की दवाइयों पर ज्यादा निर्भरता नहीं होनी चाहिए।

पारम्परिक चिकित्सा से मुझे अपने जीवन को ठीक से समझने का

मौका मिला है। साथ ही यह मेरे रोजगार का साधन भी है और लोगों की मदद का अवसर भी। स्कूल में अगर मैंने कुछ साल और गुजारे होते, तो मैं महत्वपूर्ण अनुभवों से वंचित हो जाता, जो मुझे लोगों के साथ रहकर खुद करके प्राप्त हुए हैं।

मैंने पिछले 12 साल से एलोपैथी दवा बिल्कुल नहीं ली है। जड़ी-बूटियों से तैयार औषधियाँ भी मैं बहुत कम ही लेता हूँ। दवा के बजाय मैं बीमारी के कारणों पर ज्यादा ध्यान देता हूँ। कोई भी दवा अधिक मात्रा में लेने से हानिकारक हो सकती है। पारम्परिक चिकित्सा और आधुनिक चिकित्सा में यह विशेष अन्तर है कि जड़ी-बूटियों का इलाज बहुत सस्ता, आसान और स्थानीय स्तर पर सुलभ है। इनसे रोगों का समूल नाश किया जा सकता है, बिना किसी दुष्प्रभाव के। जबकि आधुनिक चिकित्सा बहुत महँगी तो है ही, बहुत दुष्प्रभाव भी होते हैं।

अभी मैं जागरण की फार्मसी में दवाइयाँ तैयार करने, जंगलों से जड़ी-बूटियाँ लाने, गुणियों को खोजने का काम करता हूँ। उनके साथ रहकर काम करता हूँ और सीखता हूँ। गुणियों के चिकित्सालयों में मदद करता हूँ। मेरे सामने अब यह चुनौती है कि अपने युवा साथियों को पारम्परिक ज्ञान से कैसे जोड़ा जाए? आज के युवाओं को इस काम से जोड़ने से ही गुणियों की इस परम्परा को कायम रखा जा सकेगा। मैं अब सोच रहा हूँ कि अन्य पारम्परिक चीजों — पारम्परिक खेती, परम्परागत शिक्षा एवं संस्कृति को बचाए रखने के लिए भी कुछ शुरुआत की जाए। मैं चाहता हूँ कि हर परिवार में एक गुणी तैयार हो, ताकि किसी परिवार को अंग्रेजी दवाइयों और अस्पतालों पर निर्भर न होना पड़े। स्वपथगामियों को मैं अपने अनुभव बाँटने और स्थानीय पारम्परिक ज्ञान पर साथ मिलकर काम करने के लिए आमन्त्रित करता हूँ।

— सम्पर्क —

जयशंकर धाभाई

जागरण जन विकास समिति, बेदला, उदयपुर

## बड़े अख़बार की असलियत

– तन्वी पटेल <tanvi@doccenter.org>

मैं पत्रकारिता को एक ईमानदार और समाज के प्रति जिम्मेदारीपूर्ण काम में रूप में देखती थी। लेकिन टाइम्स ऑफ इण्डिया में काम करते हुए मैंने अकसर महसूस किया कि मैं उसी सिस्टम का हिस्सा बन रही थी, जिसे हम तोड़ना चाहते थे। कॉलेज में हम मीडिया के एकाधिकार और जिन नकारात्मक प्रभावों पर चर्चा करते थे, वे अब एक बेनकाब चेहरे के रूप में मुझे घूरने लगे। टाइम्स में मुनाफे को ही प्राथमिकता थी और मुझे लगा कि मीडिया केवल इस उद्देश्य के लिए नहीं चल सकता। लेकिन टाइम्स ऑफ इण्डिया में केवल विज्ञापनों के लिए 50 प्रतिशत जगह निश्चित थी व खबरों की कोई खास अहमियत नहीं दी जाती।

एक बार मैं और एक मित्र मुम्बई में पर्यटन-पुलिस की प्रभावहीनता पर एक लेख लिख रहे थे। पर्यटन-सूचना बूथ की सेटिंग एवं प्रायोजन तथा पर्यटन-पुलिस को प्रशिक्षित करने की पूरी जिम्मेदारी एक जानी-मानी ट्रेवल-एजेंसी की थी। जब एजेंसी के लोगों को यह भनक लगी कि टाइम्स ने पर्यटन-पुलिस के बारे में कुछ कार्यवाही शुरू कर दी है, तो वे सकते में आ गए, क्योंकि उन्होंने पर्यटन-पुलिस को प्रभावी बनाने के लिए कुछ खास नहीं किया था और उनको लगा कि इससे उनकी छवि खराब हो सकती है। क्योंकि वे टाइम्स ऑफ इण्डिया के लिए शक्तिशाली एडवरटाइजर्स थे, इसलिए उन्होंने सम्पादकों से सौदेबाजी शुरू कर दी। यह तय किया गया कि अख़बार में एजेंसी का कोई जिक्र नहीं किया जाएगा और बदले में एजेंसी अपने विज्ञापन टाइम्स को देना जारी रखेगी।

जब हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ता ने हमें यह बताया तो हमें घृणा सी हुई। विज्ञापनदाताओं के दावपेंचों और टाइम्स पर पैसे की हुकुमत के कारण बहुत ही आवश्यक/महत्त्वपूर्ण खबरों को लोगों तक पहुँचाने से रोका जा रहा था। शायद हमारी खबर इतनी सनसनीखेज नहीं थी, लेकिन कुछ हलचल मचाने जैसी तो थी ही।

इस अख़बार की एक और घिनौनी हरकत यह होती थी कि इसमें पाठकों को आकर्षित करने के लिए रोज के मुख्य पृष्ठ पर सुन्दरियों की तस्वीरें छापी जाती थी। क्या वह इतने घटिया स्तर का अख़बार था कि उसे चलाने के लिए बाजारी सुन्दरियों का सहारा लेना जरूरी था। मैं एक ऐसे अख़बार का हिस्सा नहीं बनना चाहती थी, जो केवल एक ऐसे अभिजात्य वर्ग को लक्ष्य मानकर निकाला जा रहा था, जिनकी उपभोगवादी जीवनशैली की नाव को कोई हिला भी नहीं सकता था।

जब मैंने अपने परिवार व दोस्तों को यह बात बताई कि मैं 'टाइम्स' को छोड़ना चाहती हूँ, तो वे मुझे 'जल्दबाज' व

'अव्यावहारिक' मानने लगे। मुझे मालूम है कि अगर मैं टाइम्स के साथ जारी रखती, तो मेरा बायोडेटा अवश्य ही प्रभावशाली बन सकता था।

शुरुआत में मुझे किसी स्वयंसेवी संस्था के साथ काम करने में थोड़ी झिझक थी। क्योंकि मैं मानती थी कि कम्पनी जैसा पैसा तो वहाँ मिलने वाला नहीं था। पर आज मुझे अपने इस निर्णय का कोई पछतावा नहीं है। टाइम्स छोड़ने के बाद मैंने 'सेंटर फॉर एज्यूकेशन एण्ड डॉक्यूमेंटेशन' मुम्बई (www.doccenter.org) से जुड़ गई, जो वर्तमान सामाजिक मुद्दों जैसे – मानवाधिकार, सिविल सोसायटी, जेंडर, पर्यावरण विकास आदि पर काम करती है। हाल में मैं शिक्षा के विकल्पों पर एक परियोजना को लेकर काम कर रही हूँ और उसके अन्तर्गत बहुत कुछ नया खोज कर पा रही हूँ।

### अख़बार को अलविदा

- सेन्साए राजकुमार मेनारिया

मेरी नज़र में यह कोई 'उपलब्धि' तो नहीं। पर हाँ, मैंने अख़बार पढ़ना छोड़ दिया। मैं भी हमेशा दूसरों की तरह अख़बार पढ़ा करता था और ज्यादा भावुक होने की वज़ह से हर ख़बर के साथ मेरा मन-मस्तिष्क सक्रिय होता और अधिकतर मैं राजनीतिक डॉयलॉगबाजी, झूठे-थोथे वादों, जन-हितैषी योजनाओं की घोषणाओं, उद्घाटन-भाषण की खबरों से उद्वेलित हो जाता या शानदार कल्पनाओं के सपनों में खो जाता। मन में भिन्न-भिन्न योजनाएँ बनती या खूब विरोध व गुस्सा उभरता और कभी-कभी तो 2-3 घण्टे दोस्तों के साथ इनकी आलोचनाओं में गुजर जाते, मगर ...वही ढाक के तीन पात।

अपनी मानसिक शक्ति का बड़ा हिस्सा अख़बार की नकारात्मक एवं असृजनशील सूचनाओं की गिरफ़्त में होकर फ़ालतू जाया होता रहा। कभी कोई बदलाव नहीं। लगभग समस्त खबरें व सूचनाएँ मेरे मन को अशान्त करती रही। एक दिन मुझे इसका रास्ता मिल गया और मुझे ये पंक्तियाँ मिलीं :-

लाखों करोड़ों टन काग़ज

सिर्फ़ इसलिए बरबाद कर दिया जाता है

कि हम ये 'जानें'

"कुकुरमुत्तों की तरह बढ़ रहे हैं – लोग, भोग एवं रोग!"

मैंने प्रयोग किया, लगभग एक सप्ताह अख़बार नहीं पढ़ा। हाँ, मैं कई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं से वंचित रहा, परन्तु मेरी 'शान्ति' मुझे पुनः मिल गई, सिर्फ़ कुछ चुकाना पड़ा और वो भी हर पल की ख़बर रखने का घमण्ड! आज भी मैं खुश हूँ, बिना अख़बार के।

# सीखने की नई शुरुआत

- सखी <sakhi\_na@rediffmail.com>

मेरे घर में पहले से ही स्कूली पढ़ाई के लिए विरोध था। मैंने, मम्मी-पापा ने साथ मिलकर यह निश्चय किया कि स्कूल में जो सिखाया जाता है, वह मेरे जीवन के लिए बेकार है, इसलिए सिर्फ स्कूल जाकर मेरी शिक्षा पूरी नहीं होगी। बहुत अलग-अलग चीजों से हम सीख सकते हैं। फिर यह सोच आई कि क्यों ना मैं एक साल के लिए स्कूल छोड़ दूँ और जिसमें मेरी रुचि हो, वह मैं सीखूँ।

पहले तो मैं थोड़ी डर रही थी कि स्कूल के बिना कैसे एक साल बीत पाएगा? स्कूल में मेरे इतने सारे दोस्त थे, उनके बिना कैसे रहूँगी? बाकी लोग क्या कहेंगे? बहुत सारे प्रश्न और चिन्ताएँ मेरे मन में थीं। पर धीरे-धीरे ऐसा लगा कि यह एक अवसर मुझे मिल रहा है, जो शायद फिर कभी ना मिले कृऔर अगर यह एक साल मुझे अच्छा नहीं लगा, तो मैं स्कूल वापस चली जाऊँगी। इस तरह मैंने तय किया कि मैं स्कूल नहीं जाऊँगी।

तो इस एक साल में मैंने क्या किया? सबसे पहले तो मैं एक चित्रकला की क्लास में शामिल हो गई। उधर थोड़ा रंगों, शेड्स के बारे में जाना। ड्रॉइंग क्लास 4 महिनों के लिए ही थी। जब खत्म हुई, तो मेरी ड्रॉइंग थोड़ा रुक गई। फिर एक बार उदयपुर गई, तो वहाँ के एक-दो कलाकारों से मिली। उनकी शैली, रंगों का मेल-जोल मुझे बहुत पसन्द आया। वापस नासिक आने के बाद से उन कलाकारों से प्रेरणा लेकर खुद की शैली विकसित करने की कोशिश कर रही हूँ। मेरे विचार, मेरी भावनाओं को अपनी पेंटिंग्स में व्यक्त करने का प्रयत्न चल रहा है।

मुझे किताबें पढ़ने का बचपन से शौक है। मुझे ज्यादातर चमत्कारिक/मायावी किस्म की किताबें पसन्द हैं। मेरे घर पर भी बहुत किताबें हैं, जो मैंने बचपन में ही पढ़ ली थी। फिर सोचा कि इन किताबों का क्या करूँ? एक विचार आया कि मैं एक पुस्तकालय शुरू कर सकती हूँ। हमारी बिल्डिंग और पड़ोस में बहुत सारे बच्चे हैं। तो उन सबके लिए एक छोटा सा पुस्तकालय शुरू हो गया है। पुस्तकालय की कोई शुल्क नहीं है। कुल 15-20 बच्चे आते हैं। जब वक्त मिलता है, तो हम किताबों पर बातें करते हैं।

मुझे अलग-अलग भाषाओं में बहुत रुचि है। मैं नई भाषा जल्दी ही सीख लेती हूँ। तो इस साल सोचा कि मैं कुछ नई भाषाएँ सीख लूँ। अभी मैं फ्रेंच और संस्कृत सीख रही

हूँ। संस्कृत मेरी दादी सिखाती है और फ्रेंच में कुछ किताबों, कैसेट्स और फ्रॉस में रहने वाली मेरी एक सहेली से ई-मेल के माध्यम से सीखती हूँ। खुद भाषाएँ सीखने के अलावा मम्मी की सहेली के दो बच्चे मेरे पास अंग्रेजी सीखने के लिए भी आते हैं। उन दोनों के स्कूल में केवल परीक्षा-केन्द्रित अंग्रेजी सिखाई जाती है। वे दोनों अंग्रेजी सीखने के लिए बहुत उत्सुक हैं। उन बच्चों से मुझे नई-नई चीजें करने की प्रेरणा भी मिलती है।

इसके अलावा मैं घर पर खेती भी करने की कोशिश कर रही हूँ। मेरे मन में प्रश्न है कि कि कम जगह में भी मैं कैसे, कब और कहाँ खेती कर सकती हूँ? अभी तक सिर्फ मीठा नीम, ग्वारपाठा और गुलाब के पौधे लगाए हैं।

खुद का अखबार भी मैंने शुरू किया है। अखबार का नाम है - प्वाइंट ऑफ व्यू। इसके माध्यम से मैं अपने काम, विचार और जीवन के बारे में लिखती हूँ।



मैं बहुत घूमती-फिरती भी हूँ। मम्मी-पापा जिन क्षेत्रों में काम करते हैं, उनके साथ जाती हूँ। एक साल स्कूल नहीं जाने का कारण यह भी था कि मैं उनके साथ घूम-फिर सकूँ, साथ में रहकर सीख सकूँ। मैं उनके साथ देशभर में बहुत जगह और दो दूसरे देशों में भी गई हूँ। जहाँ-जहाँ मैं गई, अलग-अलग लोगों से मिली, अलग-अलग संस्कृतियों

के बारे में जाना, बहुत सारी भाषाएँ सुनीं। देशभर की विविधता (जिसके बारे में हम स्कूलों इतना सुनते हैं) को पहली बार देखा और जाना।

जिन लोगों से मैं मिली, उनमें से बहुत सारे लोग वैकल्पिक शिक्षा पर काम कर रहे हैं। कुछ लोगों ने मेरे स्कूल नहीं जाने पर भी प्रश्न किया कि अगर मैं स्कूल नहीं जाऊँगी, तो दोस्त कैसे बनाऊँगी? सोशल कैसे बनूँगी? मुझे लगता है कि केवल स्कूल जाकर ही हम दोस्त नहीं बनाते। इस एक साल में मैंने इतने दोस्त बनाए हैं और ऐसा अनुभव मिला है, जो स्कूल जाने पर कभी नहीं मिल सकता। सच तो यह है कि इस एक साल में मैंने जितना सीखा है, उतना स्कूल के 8 सालों में नहीं सीख पाई।

अब यह साल खत्म हो रहा है। अब स्कूल वापस जाऊँ या नहीं, यह एक प्रश्न सामने है। पर मैंने यह फैसला कर लिया है कि मैं अब स्कूल नहीं जाऊँगी। पर फिर भी मन में थोड़े प्रश्न हैं कि स्कूल नहीं जाऊँगी, तो भी 10 वीं की परीक्षा देनी चाहिए या नहीं? पर अभी सोचने के लिए बहुत वक्त है। मेरे सवालियों के लिए आपके सुझाव आमन्त्रित हैं।

सम्पर्क पता :- सखी c/o अभिव्यक्ति, 31 ए, कल्याणी नगर, आनन्दवली, शिवार, गंगापुर रोड, नाशिक - 422005



# प्राकृतिक प्रसव

— सुमी और चन्द्रेश

<jeevanpremi@hotmail.com>

शायद कोई पूछेगा कि हमने अपने दूसरे बच्चे का प्रसव घर पर ही कराने का निश्चय क्यों किया? मूलतः प्रकृति में हमारी पूरी आस्था है कि अगर हम प्रकृति को अपना काम करने का मौका दें, तो वह खुद हमारी देखभाल करती है। हमने उन मानसिकताओं को भी बदला है, जो स्कूल, कॉलेज, मीडिया और समाज द्वारा हमारे दिमाग में भर दी गई थी, जैसे :—

— जीवन में हर कदम सम्हलकर उठाना चाहिए, ताकि हम सदैव सुरक्षित रहें — हमें जीवन बीमा कराना ही चाहिए आदि।

— अगर हम रेडीमेड चीजें काम में लेते हैं, तो अपना काफी समय बचा सकते हैं — खाना बनाने और सफाई करने जैसे कामों में क्यों व्यर्थ समय गँवाया जाए?

— सीजरिंग बहुत फास्ट और आसान पद्धति है, प्रसव के लिए पीड़ा क्यों सहन करें?

हमने कई बुजुर्गों से पूछताछ की कि जब अस्पताल और डॉक्टर नहीं थे, तब वे किस तरह से प्रसव कराते थे? उनका जवाब था कि उस समय दाई माँ होती थी। हमने अहमदाबाद के आसपास गाँवों में दाई माँ की तलाश शुरू की।

कुछ बातें हमारे दिमाग में बिल्कुल स्पष्ट थीं कि :—

— अगर हम प्रसवकाल के दौरान पौष्टिक चीजें (फल-सब्जियाँ आदि) खाते हैं, तो बीमार होने की सम्भावनाएँ कम होती हैं।

— अगर हम घर पर बना साधारण खाना खाते हैं, तो हमारा पाचन संस्थान स्वतः सन्तुलन बनाए रखता है।

— यदि हम अपने काम के 16 घण्टों के दौरान 3 या 4 बार तक खाना खाते हैं, तो पाचन सम्बन्धी समस्याओं की सम्भावनाएँ बहुत कम रहती हैं।

हम एक 80 वर्षीय दाई माँ से मिले। हमने उसे बताया कि हम अपने होने वाले बच्चे और मेरे शरीर में कोई इंजेक्शन या टीका नहीं लगवाना चाहते। उसने कहा, “मैं अपने हाथों से सैंकड़ों को बच्चों को जन्मा चुकी हूँ। मैंने खुद अपने 11 बच्चों को भी घर पर ही जन्म दिया था। आप देखिए मैं आज भी बिल्कुल स्वस्थ हूँ। चिन्ता मत करो, जब भी जरूरत हो, मुझे बुला लेना।”

गर्भावस्था के दौरान हमें परिवार और रिश्तेदारों को लेकर बहुत सारी नकारात्मक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। मेरा ससुराल पक्ष भी आर्थिक तंगी में था और हमें उनकी भी मदद करनी थी। बहुत परेशानियों के बावजूद मैंने खुद को तनावमुक्त रखा। मैं (सुमी) ‘गर्भोपनिषद’ सुनते हुए आराम

महसूस करती थी। यह उपनिषद पूरी तरह से इसी पर आधारित है कि बच्चे को कैसे जन्म दिया जाए? मैं कुदरत के साथ खेलती और अपनी कोख में स्थित बच्चे से बातें करते। मैं घर का बना साधारण खाना खाती। खाना बनाने और सफाई करने जैसे काम भी करती। टहलने के लिए बाहर जाती, संगीत सुनती। कभी-कभी प्रेरणादायी पुस्तकें पढ़ती। किसी तरह की दवाइयाँ, विटामिन या आयरन लेने के बजाय मैं अलग-अलग सब्जियों का सूप बनाती, सभी तरह की सब्जियाँ और फल खाती। इसलिए मेरा मन सकारात्मक विचारों से परिपूर्ण था।

5 नवम्बर, 2003 को जब मैं अपना दैनिक काम कर रही थी, शाम को 6 बजे से हल्का सा दर्द शुरू हुआ। दाई माँ की मदद से बिना किसी इंजेक्शन या चीरे-टाँके के अजन्म (दूसरा बेटा) धरती पर अवतरित हुआ। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह रोया नहीं! बस टुकुर-टुकुर देख रहा था, मानो यह अनुमान लगा रहा हो कि वह अब कहाँ आ गया है!

उन्हीं दिनों हमारे कई रिश्तेदारों और दोस्तों के घर भी बच्चे हुए (जिनका जन्म अस्पताल में हुआ)। वे हर महीने डॉक्टरों के पास जाते हैं। हर बार नई बीमारियाँ, फिर नई दवाइयाँ! अजन्म 18 महीने का हो गया है और हम अभी तक उसे एक बार भी डॉक्टर के पास लेकर नहीं गए हैं। छोटी-मोटी बीमारियों का उपचार हम प्राकृतिक औषधियों से घर पर ही कर लेते हैं, जैसे — खान-पान में बदलाव करना और स्थानीय जड़ी-बूटियों का सेवन करना। अगर हमारे दोनों बच्चों में से कोई गम्भीर रूप से भी बीमार हो जाए, तो हमारा विश्वास है कि वे स्वतः ही स्वस्थ हो जाएँगे। बच्चे खुद भी अपने शरीर के बारे में समझ रखने लगे हैं। उदाहरण के तौर पर जब कुदरत अस्वस्थ महसूस करता है, तो खुद ही कह देता है कि उसे आराम की जरूरत है। यहाँ तक कि जब उसे दस्त हो जाते हैं, तो केले खा लेता है।

स्वस्थ और सुरक्षित प्रसव के बावजूद भी कई लोगों ने हमसे कहा कि आप लोग भाग्यशाली हैं, जो कुछ हुआ नहीं! हमें लगता है कि आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था ने लोगों के दिमाग में बहुत डर भर दिया है। सोनोग्राफी, विटामिन, इंजेक्शन, चेक-अप ... ये सब लोगों को भयभीत कर देते हैं। और फिर ऊपर से गायनिकोलॉजिस्ट कहते हैं, “किसी भी समय कोई समस्या हो सकती है, इसलिए कोई रिस्क मत लो!” इस तरह वे आराम से लोगों से पैसा ऐंठते हैं।

मेरे लिए बच्चे को जन्म देना पीड़ादायक नहीं, बल्कि एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। मुझे लगता है, हर महिला को इस प्रक्रिया का आनन्द लेना चाहिए। यह एक प्रकार का ध्यान है। मेरा विश्वास है कि एक बच्चा और उसकी माँ तभी स्वस्थ रह सकते हैं, जब वे इस स्वाभाविक प्रक्रिया से गुजरते हैं।

## ब्राजील यात्रा

- शम्मी नन्दा <shammi\_nanda@yahoo.com>

मैं अपनी मित्रों तान्या व पुशिकन के साथ ब्राजील घूमने गया था। इस दौरान हमने कुछ दिन एक द्वीप मोहो दे साओं पॉलो में बिताए। वहाँ पर कोई गाडियां नहीं चलती हैं। मैंने फैसला किया कि मैं यहाँ पर कुछ दिन रुकूँगा और कुछ काम जरूर करूँगा। मैं वहाँ एक महिला शीना को जानता था, वह पुराने बिजली के उपकरणों से निकले तांबे के तार से सुंदर झुमके और हार बनाती है।

मैंने उससे यह काम सीखने की इच्छा जाहिर की और कहा कि मैं सीखते हुए उसके लिए काम करूँगा और बदले में उसके घर में रहूँगा। उसकी सहमति पाकर मैं वहीं रहकर गहने बनाने का काम सीखने लगा। शीना ने एक दफ्तर की नौकरी छोड़ कर यह काम शुरू किया था। उसने कहा कि हाथ से काम करना उसके लिए एक तरह से थेरेपी है। शीना ने बताया कि अगर किसी को उसका बनाया सामान पसंद आता है तो वह दाम की चिंता नहीं करती और उसे सस्ते में भी बेच देती है।

मैं वहीं पर बीरू और मॉइरा से मिला, जिनके साथ भी काम सीखना शुरू किया। सबसे पहले बीरू ने मुझे तार से पेरू के एक डिजाइन का ब्रेसलेट बनाना सिखाया। वहाँ की पुर्तगाली भाषा को समझने की कठिनाई भी थी, लेकिन हाथ के कामों में भाषा कोई बाधा नहीं रहती। जब बीरू ने खुद वह डिजाइन बनाकर बताया तो वह मुझे समझ में आ गया। जब मैं अपने बनाए डिजाइन को लेकर संकोच जताता तो वह कहता कि पहली बार कोशिश करने के लिहाज से यह बहुत बेहतर है। मैंने पूछा कि इसे बनाने में उसे कितना समय लगता है? उसने कहा, मैं इसे स्कूल की पढाई की तरह नहीं करता, जब मन होता है तब इस पर काम करता हूँ। मुझे भी उसका जवाब बहुत अच्छा लगा और समझ आया कि मेरी एक तरह की दुकानदारी की मानसिकता थी, जिसने मुझे यह सवाल पूछने के लिए प्रेरित किया।

मैं उसके सामान से ब्रेसलेट बना रहा था तो मैंने कहा कि यह तुम अपने पास रखना और बेचना, इस पर उसने मुझे कहा कि मैं जो कुछ बनाऊँगा उसे मुझे ही लेकर जाना होगा। मुझे उसकी यह भावना बहुत अच्छी लगी। मैं बदले में उन दोनों को कुछ देना चाहता था, इसलिए हमने उनके घर में खाना बनाया। उन्होंने अपने अन्य दोस्तों को भी बुलाया जोकि यही काम करते थे, फिर तो हमारे उस गांव में कई दोस्त थे और क्योंकि उन्हें पता था कि हम भी उनका काम सीखना चाहते हैं तो वे बहुत ही प्यार से हमें सिखाते।

ये सब लोग कई साल से दक्षिण अमेरिका में घूम रहे हैं। इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जिनका औपचारिक शिक्षा से पूर्णतया मोहभंग हो चुका है। वे लोग घुमक्कड़ी को सीखने का एक

जरिया समझते हैं। उनमें रोजमर्रा की जिंदगी में आने वाली समस्याओं से निपटने की क्षमता देखने लायक है। एक बार हम रात के बारह बजे खाना बना रहे थे और गैस खत्म हो गई। मैंने देखा, वहां किसी के चेहरे पर शिकन तक नहीं थी, दो लोग बाहर गए, कुछ लकडियां ढूँढ कर लाए और ईंटों का चूल्हा बनाकर खाना बनाया। एक दिन सल्वाडोर में पांच लोग खाना खाने वाले थे पर चम्मच नहीं थे, तुरंत एक दोस्त मार्कोस ने कुछ लकडी के टुकड़े उठाए और चाकू से छील कर पांच चम्मच बना दिए।

मैं बहुत दिनों तक सामान बनाता रहा पर उसे बेचा नहीं, सिर्फ दोस्तों को गिफ्ट दिया। एक दिन मैंने रियो के समुद्र तट पर गहने बेचना शुरू किया। उस दौरान मेरे मन में कई सवाल उठे। ब्राजील में भी अन्य देशों की तरह सड़क पर सामान बेचना मना है। यहाँ भी जब शहर की नगर पालिका बनती है तो सड़क पर सामान बेचना गैरकानूनी हो जाता है, जबकि भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में फेरीवालों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है।

मैं दूसरे देश का हूँ तो मेरा वहाँ सामान बेचना तो गैरकानूनी भी है। मुझे ध्यान आता है कि भारत में मैं बचपन से ही बहुराष्ट्रीय कंपनियों का सामान खरीदता रहा हूँ। मेरे मन में यह प्रश्न उठता है कि मेरा सामान बेचना ही क्यों गैरकानूनी है और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का क्यों नहीं?

रिओ में मैं एक दिन एक आदमी से मिला, जो वहाँ बैठ कर लकडी की मूर्तियां बना रहा था। मैं उत्सुकतावश उसके पास बैठ गया और उसको मूर्ति बनाता हुआ देखने लगा, उसका नाम था पॉलो। हमारी बातचीत शुरू हुई और उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं मूर्ति बनाना चाहूँगा? फिर क्या था, मैंने भी औजार उठा लिए और मूर्ति बनाना शुरू कर दिया। अपनी बनाई हुई मूर्ति देखकर खुद मुझे ही विश्वास नहीं हुआ कि मैंने ही उसे बनाया है! फिर मैंने सोचा कि जयपुर में भी ऐसे लोग हैं जो लकडी की मूर्तियाँ बनाते हैं। पूरा जौहरी बाजार है, जहाँ सुनारी का काम होता है। जूते बनाने वाले मोची हैं, पर मैंने कभी उनसे सीखने का प्रयास भी नहीं किया। और तो और मेरी दादी के पास पेटी चरखा था, जो मैंने उनसे कभी नहीं सीखा और उनके मरने के बाद जो कबाड में पडा रहा और एक दिन टूट-फूट कर चला गया।

बचपन में ये सब चीजें नहीं सीख पाने का कारण यह रहा है कि एक तो जयपुर में मैंने अपना अधिकतर समय स्कूल की चारदीवारी में बिताया, वहाँ मैं एक-एक घंटी के बजने का इंतजार करता था। मैं तो यह कहूँगा कि स्कूल ने मुझसे मेरे रोज के छह-सात घंटे छीन लिए। ब्राजील में जाकर मुझे अपने परिवेश से बाहर जाकर चीजों को देखने और करने का मौका मिला। यहाँ तक कि जिन चीजों को करने की इच्छा बचपन में होती थी, उन्हें भी मैंने यहाँ आकर किया।

## वैश्विक बाजार का एक 'विकल्प'

अप्रैल में आयोजित जैविक उद्यम-उत्सव में महादेव भाई से मिलने का मौका मिला, जो अहमदाबाद में 'विकल्प' नामक ऑर्गेनिक स्टोर चला रहे हैं। जयप्रकाश नारायण जी द्वारा शुरू किए गए छात्र आन्दोलन के दौरान आपने कॉलेज छोड़कर अपने जीवन की दिशा बदली और छात्र युवा संघर्षवाहिनी, सम्पूर्ण क्रान्ति युवा संगम, आजादी बचाओ आन्दोलन आदि कई आन्दोलनों से जुड़े। उसके बाद खुद 'विकल्प' बनाते हुए आज भी संघर्ष कर रहे हैं। बातचीत के अंश प्रस्तुत हैं :-

### - बड़े बाजार से लड़ने के लिए आप अपने जीवन में क्या प्रयोग कर रहे हैं?

हम घर के सभी सदस्य यथा-सम्भव स्वदेशी (हाथों से बनी) चीजों का ही इस्तेमाल करते हैं। हम और हमारे बच्चे सिर्फ खादी पहनते हैं। हम मानते हैं कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है, तो हमें स्थानीय एवं हस्तनिर्मित चीजों को बढ़ावा देना होगा। क्योंकि इनसे न तो पर्यावरण को कोई नुकसान होता है और न ही समाज को। इसके साथ-साथ हमने जैविक (रसायनमुक्त) चीजों पर सोचना शुरू किया। हमने महसूस किया कि हम आज इतना सारा केमिकल और पेस्टीसाइड्स खा रहे हैं, इसका विरोध करना ही होगा।

### - 'विकल्प' की शुरुआत कैसे हुई?

रासायनिक चीजों के बारे में जब हम लोगों से बातचीत करते थे, तो लोग अकसर यह सवाल करते कि इन रासायनिक चीजों के अलावा विकल्प क्या हैं? इसका हमारे पास कोई जवाब नहीं था। 1993 में हमारे कुछ मित्रों ने देशी गुड़ बनाना शुरू किया। इसी के साथ 'विकल्प' की शुरुआत हुई। आपको यह जानकर ताज्जुब होगा कि बाजार में उपलब्ध गुड़ में 11-13 तरह के केमिकल मिलाए जाते हैं! कपड़े धोने के पाउडर का इस्तेमाल किया जाता है! इससे गुड़ दिखावटी रूप से खूबसूरत हो जाता है, लेकिन इसका स्वाद बिगड़ जाता है, इसकी संरचना बिगड़ जाती है। देशी गुड़ की शुरुआत के साथ ही काफी लोगों की रुचि बढ़ी।

धीरे-धीरे हमें लगा कि लोग गुड़ के लिए हमारे पास आते हैं, लेकिन बाकी चीजों के लिए तो उन्हें बाजार पर ही निर्भर रहना पड़ता है। इसलिए यह तय किया कि क्यों नहीं हम दैनिक उपयोग की चीजें भी लोगों को उपलब्ध कराएँ। हमने कुछ किसानों से बातचीत की, देशी अनाज और दालें भी रखना शुरू किया।

### - विकल्प के साथ क्या अनुभव रहे हैं?

जब हमने विकल्प शुरू किया, हमारे पास ज्यादा पैसा नहीं था। हमने अपने मित्रों से पैसा इकट्ठा करके शुरुआत की। पहले तो लगा कि हम बड़े बाजार के सामने कहाँ टिक सकेंगे? लेकिन

लोगों के सहयोग और विश्वास की वजह से हमें काफी सफलता मिली है। लोगों ने अपने खर्च से परचे छपवाकर बाँटे और आज भी फोटोकॉपी करवाकर दूसरों के साथ बाँटते हैं।

विकल्प की हमारी कोई 'दुकान' नहीं है। हमारे घर में खटिया के नीचे हमारा सामान होता है। केवल ठण्ड के दिनों में हम टेबल पर सामान रखते हैं। लेकिन काफी लोगों के साथ हमारा रिश्ता है, इसलिए लोग अपने आप चले आते हैं। लोगों का हम पर विश्वास है, क्योंकि हम क्वालिटी के साथ कोई समझौता नहीं करते हैं। हमारे पास हर चीज शत-प्रतिशत शुद्ध होती है।

### - जैविक चीजों और जैविक उद्यम से आपका क्या आशय है?

जैविक चीजों के बारे में हमारा मानना है कि केवल रासायनिक खाद और कीटनाशकों से मुक्त चीजें ही जैविक नहीं हैं, बल्कि उसके उत्पादन की पूरी प्रक्रिया भी देशी होनी चाहिए। बीज हाईब्रिड न हो और जेनेटिकली मॉडिफाइड न हो, ऐसी चीजों को ही हम विकल्प में रखते हैं। जो चीजें यहाँ के वातावरण के अनुकूल हो, यहीं के लोगों द्वारा बनाई गई हों, ऐसी चीजों को प्रोत्साहन देने का प्रयास हम कर रहे हैं। कई लोग ज्यादा पैसे कमाने के लालच में खुद रासायनिक खाकर दूसरों को ऑर्गेनिक बेचते हैं। हमें लगता है कि यह गलत है। सबसे पहले हमने अपने जीवन में इन चीजों को अपनाया है, फिर बेचना शुरू किया।

जैविक उद्यम बड़े बाजार से हटकर है। क्योंकि यह व्यापार की चीज नहीं है, यह तो एक जीवन पद्धति है। कृषि हमारे यहाँ की संस्कृति है, व्यवसाय नहीं।

### - आज आपके जीवन में क्या नए प्रश्न आ रहे हैं?

मैं कई बार सोचता हूँ कि जिन चीजों के खिलाफ हम लड़ रहे हैं, कहीं वे ही हमारे जीवन में नहीं आ जाएँ? जैसे शोषण के खिलाफ हम लड़ रहे हैं, तो कहीं ऐसा नहीं हो कि हमारे इस उद्यम से दूसरे लोगों का शोषण हो रहा हो? आज समाज में जो बिचौलिया वर्ग है, वह बहुत मुनाफा कमाता है और लोगों के शोषण में उनका बड़ा हाथ है। इसलिए हम कोशिश करते हैं कि बिचौलियों को हटाएँ और सीधे किसानों व उत्पादकों से रिश्ते बनाएँ तथा उनको वाजिब मुनाफा दिलाएँ। हमने अपने जीवन की आवश्यकताओं को बहुत सीमित कर लिया है। इसलिए ज्यादा पैसा कमाने की जरूरत भी नहीं है।

जो लोग हमारे साथ सीखना चाहते हैं और हमसे जुड़ी विभिन्न संस्थाओं के साथ समय बिताना चाहते हैं, वे आमन्त्रित हैं।

सम्पर्क :- महादेव विद्रोही, "विकल्प", साबरमती गाँधी आश्रम के सामने, अहमदाबाद - 27 फोन : 079-2755199, 27557878 ई-मेल : <mahadevvidrohi@yahoo.com>

## श्रम छोड़कर स्कूल जाने के फायदे!

आजकल कई संस्थाओं द्वारा यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि सभी प्रकार के श्रम-कार्य बच्चों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं तथा श्रमकार्यों से बचने के लिए सभी बच्चों को स्कूल भेजना चाहिए। लेकिन हम अपने अनुभवों के आधार पर श्रम छोड़कर स्कूल जाने के फायदों (?!?) को यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। आप भी इसमें अपना योगदान दें।

10. हम दूध, दही, घी, अनाज एवं सब्जियों का विदेशों से आयात कर सकेंगे।
9. परिवारिक जिम्मेदारियाँ छोड़ राष्ट्रभक्ति के गीत गा सकेंगे।
8. अनपढ़ एवं गँवार लोगों से काले अक्षर के बदले भैंस बराबर दाम वसूलने में ग्लानि महसूस नहीं होगी।
7. प्रकृति के प्रति अपने दायित्व से मुक्त होकर आधुनिक मशीनों और तकनीकी वस्तुओं के साथ जीवन जी सकते हैं।
6. मेहनत के काम में अपनी शारीरिक ऊर्जा को खर्च करने के बजाय, विश्वबैंक से भीख माँगने की कला विकसित कर सकेंगे।
5. देश के विकास में बाधक गाँवों को जल्द से जल्द खत्म करके बड़े-बड़े आधुनिक शहर बसा सकेंगे।
4. धरनों, रैलियों, हड़तालों में बेकार लोगों की भीड़ जुटाने में कठिनाई नहीं होगी। बेरोजगारी के खिलाफ नारा बुलन्द करने के लिए पढ़े-लिखे युवाओं को पर्याप्त समय मिल सकेगा।
3. कृषि के लिए रासायनिक खाद, दवाइयाँ एवं मशीनों का उपयोग करने में सक्षम हो सकेंगे तथा खेती के पारम्परिक तरीकों को नष्ट करके एक और हरित क्रान्ति ला सकेंगे।
2. ज्यादा से ज्यादा रासायनिक दवाइयों पर निर्भर होकर अपने स्वास्थ्य को इस प्राकृतिक प्रदूषण से बचाए रख सकेंगे।
1. नामी-कम्पनियों (Nike, Adidas, Weekender...) के ठप्पे वाले उत्पादों का इस्तेमाल कर सकेंगे तथा उनके श्रेष्ठ मूल्य को पहचान सकेंगे।

## फिल्म-निर्माण कार्यशाला

अपने भीतर के कलाकार को पहचानने और अपनी कला को विकसित करने के लिए हम पिछले वर्ष की भाँति इस बार भी उदयपुर में 25 अगस्त से 2 सितम्बर तक 'स्वपथगामी फिल्म-निर्माण कार्यशाला' आयोजित कर रहे हैं। फिल्म-निर्माण की तकनीकी जानकारी (डिजिटल कैमरे से शॉट लेना, अपनी फिल्मों के स्टोरी-बोर्ड तैयार करना, एडिटिंग करना) के अलावा हम साथ मिलकर विभिन्न प्रकार की चीजें सीखेंगे, एक-दूसरे के साथ अपने हुनर बाँटेंगे। हम छोटे-छोटे समूहों में कुछ फिल्में बनाएँगे, रोचक फिल्में देखेंगे और उनका विश्लेषण करेंगे। यह कार्यशाला उन सब स्वपथगामियों के लिए खुला मौका है, जो भेड़चाल से निकलकर अपनी अभिव्यक्ति के अवसर खोजना चाहते हैं। सम्पर्क करें :-

मनीष जैन <manish@swaraj.org> फोन : 0294-2451303

## स्वपथगामी संगीत कार्यशाला

नई धुन, नए सुर, नए गीत - सम्पूर्ण रूप से नए प्रकार के संगीत के सृजन के लिए पहल समूह स्वपथगामियों को आमन्त्रित करता है। कस्तूरबाग्राम, इन्दौर में 13 से 16 जून तक आयोजित संगीत कार्यशाला में हम पारम्परिक वाद्ययन्त्र (हारमोनियम, तबला, ढोलक, ढपली, तम्बूरा, बाँसुरी...) बजाने का अभ्यास करेंगे, नए वाद्ययन्त्र बनाएँगे और अलग-अलग चीजों से ध्वनियाँ निकालते हुए नई धुनें और नए गीत बनाएँगे। कार्यशाला के दौरान हम सार्वजनिक रूप से संगीत कार्यक्रम का आयोजन करेंगे। इसके साथ ही हम कुछ प्रश्नों की खोज करेंगे, जैसे :- रेडिमेड पॉप म्यूजिक को हम कैसे चुनौती दें? एक संगीतकार में क्या-क्या गुण होने चाहिए? हमारे जीवन में संगीत की क्या भूमिका है? सम्पर्क करें :-

अमित, 'पहल', गली नं. 4, तेजाजी नगर, इन्दौर फोन : 9303276755; <indore\_amit@rediffmail.com>

आज हमारे सामने यह बहुत बड़ी चुनौती है कि हम इस बनी-बनाई दुनिया में अपनी पहचान और अपने तरीके से जीवन जीने की आजादी को कैसे कायम रखें? अमानवीय व्यवस्था के जाल से निकलकर अलग-अलग विकल्प कैसे बनाएँ? आज यह जरूरी हो गया है कि हम अपनी क्षमताओं को पहचानकर सृजनात्मक जीवन की शुरुआत करें, जिसमें हम आपसी विश्वास व अन्तर्निर्भरता पर आधारित स्वराज हासिल कर सकें। इसके लिए हर व्यक्ति को अपने सीखने की प्रक्रिया को अपने हाथ में लेना पड़ेगा।

स्वपथगामियों द्वारा शुरु की गई यह पत्रिका विभिन्न समूहों और व्यक्तियों के साथ संवाद स्थापित करने की एक कोशिश है, जिसके माध्यम से हम अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं।

पत्रिका में जिन नए अवसरों का उल्लेख किया गया है, उनके बारे में विस्तृत जानकारी के लिए आप उनसे सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

हम उन सभी लोगों को आमन्त्रित करते हैं, जो अपने जीवन में नए-नए प्रयोग कर रहे हैं और साथ मिलकर सीखने के मौके बना रहे हैं। हम उन लोगों को भी आमन्त्रित करते हैं, जो इस पत्रिका के सम्पादन में सहयोग करना चाहते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

रामावतार सिंह <ramawtarsingh@yahoo.co.in> एवं

अनीश सिंह <anish.manzil@rediffmail.com>

c/o शिक्षान्तर, 21 फतेहपुरा, उदयपुर - 04 (राजस्थान)

फोन - 0294-2451303